पाठ–6

गिल्लू

महादेवी वर्मा

जन्म– 1907

मृत्यु– 1987

लेखक परिचय –

छायावादी काव्य की वृहद्चतुष्टयी में महादेवी वर्मा हैं। महादेवी के बाल मन पर धर्मपरायण माता हेमरानी देवी का अत्यन्त प्रभाव पड़ा तथा उनके द्वारा ही धार्मिक ग्रन्थों का ज्ञान हुआ। महादेवी कोमल हृदय नारी और रहस्यवादी भावना से ओत–प्रोत होकर वेदनामय काव्य में लौकिक से भिन्न आध्यात्मिक जगत की सहज संवेद्य अनुभूति को अभिव्यक्त करती हैं।

काव्यात्मक अनुभूति की तरह ही गद्य में भी अपनी संवेदनाओं का सजीव चित्र महादेवी ने प्रस्तुत किया है। सामाजिक समस्याओं और अभिशप्त नारी जीवन के जलते प्रश्नों को विचारात्मक निबन्ध से अभिव्यक्त किया है। महादेवी ने जीवन यात्रा में सम्पर्क में आने प्रत्येक चेतन को अपने साहित्य का अवलम्बन प्रत्यक्ष–परोक्ष बनाया है। इसी अभिव्यंजना में 'संस्मरणात्मक–रेखाचित्र' विधा का सहज सृजन आपकी लेखनी से होता है।

कृतियाँ

नीहार, रश्मि, नीरजा, सान्ध्यगीत, दीपशिखा, यामा (काव्य) स्मृति की रेखाएँ , अतीत के चलचित्र (गद्य)

पाठ परिचय

'गिल्लू' संस्मरण के माध्यम से महादेवी ने जीव–जन्तुओं की समझ और संवेदना को अभिव्यंजित किया है। गिल्लू (गिलहरी) का लेखिका के प्रत्येक कार्य के प्रति व्यवहार यह अनुभूति कराता है कि मौन अभिव्यक्ति को समझने के लिए मन को एकाकार करना अपरिहार्य है। इसी कारण गिल्लू की सूक्ष्म संवेदना को लेखिका ने अनुभव किया। इस संस्मरण के माध्यम से लेखिका आधुनिकता और भौतिकवाद से संवेदना शून्य मन को द्रवित कर संवेदनशील बनाने में सहायक है।

गिल्लू

सोनजूही में आज एक पीली कली लगी है। इसे देखकर अनायास ही उस छोटे जीव का स्मरण हो आया, जो इस लता की सघन हरीतिमा में छिपकर बैठता था और फिर मेरे निकट पहुँचते

ही कंधे पर कूदकर मुझे चौंका देता था। तब मुझे कली की खोज रहती थी, पर आज उस लघुप्राण की खोज है।

परन्तु वह तो अब तक इस सोनजूही की जड़ में मिट्टी होकर मिल गया होगा। कौन जाने स्वर्णिम कली के बहाने वही मुझे चौंकाने ऊपर आ गया हो।

अचानक एक दिन सवेरे कमरे से बरामदे में आकर मैंने देखा, दो कौवे एक गमले के चारों ओर चोंचों से छुआ–छुओवल जैसा खेल खेल रहे हैं। यह काकभुशुंडि भी विचित्र पक्षी है– एक साथ समादरित, अनादरित, अति सम्मानित, अति अवमानित।

हमारे बेचारे पुरखे न गरुड़ के रूप में आ सकते हैं, न मयूर के, न हंस के । उन्हें पितृपक्ष में हमसे कुछ पाने के लिए काक बनकर ही अवतीर्ण होना पड़ता है। इतना ही नहीं दूरस्थ प्रियजनों को भी अपने आने का मधु संदेश इनके कर्कश स्वर में ही देना पड़ता है। दूसरी ओर हम कौवा और काँव–काँव करने को अवमानना के अर्थ में ही प्रयुक्त करते हैं। मेरे काकपुराण के विवेचन में अचानक बाधा आ पड़ी, क्योंकि गमले और दीवार की संधि में छिपे एक छोटे से जीव पर मेरी दृष्टि रुक गयी। निकट जाकर देखा, गिलहरी का छोटा सा बच्चा है, जो संभवतः घोंसले से गिर पड़ा है और अब कौवे जिसमें सुलभ आहार खोज रहे हैं।

काकद्वय की चोंचों के दो घाव उस लघुप्राण के लिए बहुत थे, अतः वह निश्चेष्ट–सा गमले से चिपटा पड़ा था।

सबने कहा, कौवे की चोंच का घाव लगने के बाद यह बच नहीं सकता, अतः इसे ऐसे ही रहने दिया जाये।

परन्तु मन नहीं माना–उसे हौले से उठाकर अपने कमरे में लाई, फिर रूई से रक्त पोंछकर घावों पर पेंसिलिन का मरहम लगाया।

रूई की पतली बत्ती दूध से भिगोकर जैसे–तैसे उसके नन्हे से मुँह में लगाई पर मुँह खुल न सका और दूध की बूँदें दोनों ओर ढुलक गई।

कई घंटे के उपचार के उपरान्त उसके मुँह में एक बूँद पानी टपकाया जा सका। तीसरे दिन वह इतना अच्छा और आश्वस्त हो गया कि मेरी अँगुली अपने दो नन्हे पंजों से पकड़कर, नीले काँच के मोतियों जैसी आँखों से इधर–उधर देखने लगा।

तीन–चार मास में उसके स्निग्ध रोएँ, झब्बेदार पूँछ और चंचल चमकीली आँखें सबको विस्मित करने लगीं।

हमने उसकी जातिवाचक संज्ञा को व्यक्तिवाचक का रूप दे दिया और इस प्रकार हम उसे गिल्लू कहकर बुलाने लगे। मैंने फूल रखने की एक हल्की डलिया में रूई बिछाकर उसे तार से खिड़की पर लटका दिया।

वही दो वर्ष गिल्लू का घर रहा। वह स्वयं हिलाकर अपने घर में झूलता और अपनी काँच के मनकों–सी आँखों से कमरे के भीतर और खिड़की से बाहर न जाने क्या देखता–समझता रहता था। परन्तु उसकी समझदारी और कार्यकलाप पर सबको आश्चर्य होता था।

जब मैं लिखने बैठती तब अपनी ओर मेरा ध्यान आकर्षित करने की उसे इतनी तीव्र इच्छा होती थी कि उसने एक अच्छा उपाय खोज निकाला। वह मेरे पैर तक आकर सर्र से परदे पर चढ़ जाता और फिर उसी तेजी से उतरता। उसकी यह दौड़ने का क्रम तब तक चलता जब तक मैं उसे पकड़ने के लिए न उठती। कभी मैं गिल्लू को पकड़कर एक लम्बे लिफाफे में इस प्रकार रख देती कि उसके अगले दो पंजों और सिर के अतिरिक्त सारा लघुगात लिफाफे के भीतर बन्द रहता। इस अद्भुत स्थिति में कभी–कभी मेज पर दिवार के सहारे खड़ा रहकर वह अपनी चमकीली आँखों से मेरा कार्यकलाप देखा करता ।

भूख लगने पर चिक–चिक करके मानो वह मुझे सूचना देता और काजू या बिस्किट मिल जाने पर उसी स्थिति में लिफाफे से बाहर वाले पंजों से पकड़कर उसे कुतरता रहता।

फिर गिल्लू के जीवन का प्रथम बंसत आया। नीम–चमेली की गंध मेरे कमरे में हौल–हौले आने लगी। बाहर की गिलहरियाँ खिड़की की जाली के पास आकर चिक–चिक करके न जाने क्या कहने लगी ?

गिल्लू को जाली के पास बैठकर अपनेपन से बाहर झाँकते देखकर मुझे लगा कि इसे मुक्त करना आवश्यक है।

मैंने कीलें निकालकर जाली का एक कोना खोल दिया और इस मार्ग से गिल्लू ने बाहर जाने पर सचमुच ही मुक्ति की साँस ली। इतने छोटे जीव को घर में पले कुत्ते, बिल्लियों से बचाना भी एक समस्या ही थी।

आवश्यक कागज–पत्रों के कारण मेरे बाहर जाने पर कमरा बंद ही रहता है। मेरे कॉलेज से लौटने पर जैसे ही कमरा खोला गया और मैंने भीतर पैर रखा, वैसे ही गिल्लू अपने जाली के द्वार से भीतर आकर मेरे पैर से सिर और सिर से पैर तक दौड़ लगाने लगा। तब से यह नित्य का क्रम हो गया।

मेरे कमरे से बाहर जाने पर गिल्लू भी खिड़की की खुली जाली की राह से बाहर चला जाता और दिन भर गिलहरियों के झुंड का नेता बना हर डाल पर उछलता–कूदता रहता और ठीक चार बजे वह खिड़की से भीतर आकर अपने झूले में झूलने लगता।

मुझे चौंकाने की इच्छा उसमें न जाने कब और कैसे उत्पन्न हो गई थी। कभी फूलदान के फूलों में छिप जाता, कभी परदे की चुन्नट, कभी सोनजुही की पत्तियों में।

मेरे पास बहुत से पशु–पक्षी हैं और उनका मुझसे लगाव भी कम नहीं है, परन्तु उनमें से किसी को मेरे साथ मेरी थाली में खाने की हिम्मत हुई है, ऐसा मुझे स्मरण नहीं आता।

गिल्लू इनमें अपवाद था। मैं जैसे ही खाने के कमरे में पहुँचती, वह खिड़की से निकलकर आँगन की दीवार, बरामदा पार करके मेज पर पहुँच जाता और मेरी थाली में बैठ जाना चाहता। बड़ी कठिनाई से मैंने उसे थाली के पास बैठना सिखाया, जहाँ बैठकर वह मेरी थाली में से एक–एक चावल उठाकर बड़ी सफाई से खाता रहता। काजू उसका प्रिय खाद्य था और कई दिन काजू न मिलने पर अन्य खाने की चीजें या तो लेना बंद कर देता या झूले से नीचे फेंक देता था।

उसी बीच मुझे मोटर दुर्घटना में आहत होकर कुछ दिन अस्पताल में रहना पड़ा। उन दिनों जब मेरे कमरे का दरवाजा खोला जाता गिल्लू अपने झूले से उतरकर दौड़ता और फिर किसी दूसरे को देखकर उसी तेजी से अपने घोंसले में जा बैठता। सब उसे काजू दे आते, परन्तु अस्पताल से लौटकर जब मैंने उसके झूले की सफाई की तो उसमें काजू भरे मिले, जिनसे ज्ञात होता था कि वह उन दिनों अपना प्रिय खाद्य कितना कम खाता रहा।

मेरी अस्वस्थता में वह तकिए पर सिरहाने बैठकर अपने नन्हे–नन्हे पंजों से मेरे सिर और बालों को इतने हौले–हौले सहलाता रहता कि उसका हटना एक परिचारिका के हटने के समान लगता।

गर्मियों में जब मैं दोपहर में काम करती रहती तो गिल्लू न बाहर जाता न अपने झूले में बैठता। उसने मेरे निकट रहने के साथ गरमी से बचने का एक सर्वथा नया उपाय खोज निकाला था। वह मेरे पास रखी सुराही पर लेट जाता और इस प्रकार समीप भी रहता और ठंडक में भी रहता।

गिलहरियों के जीवन की अवधि दो वर्ष से अधिक नहीं होती, अतः गिल्लू की जीवन यात्रा का अंत आ ही गया। दिन भर न उसने कुछ खाया न बाहर गया। रात में अंत की यातना में भी वह अपने झूले से उतरकर मेरे बिस्तर पर आया और ठंडे पंजों से मेरी वही अंगुली पकड़कर हाथ से चिपक गया, जिसे उसने अपने बचपन की मरणासन्न स्थिति में पकड़ा था। पंजे इतने ठंडे हो रहे थे कि मैंने जागकर हीटर जलाया और उष्णता देने का प्रयत्न किया। परन्तु प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया।

उसका झूला उतारकर रख दिया गया है और खिड़की की जाली बंद कर दी गई है, परन्तु गिलहरियों की नयी पीढ़ी जाली के उस पार चिक–चिक करती ही रहती है और सोनजुही पर बंसत आता ही रहता है।

सोनजुही की लता के नीचे गिल्लू को समाधि दी गई है– इसीलिए भी कि उसे वह लता सबसे अधिक प्रिय थी–इसलिए भी कि उस लघुगात का, किसी वासंती दिन, जूही के पीताभ छोटे फूल में खिल जाने का विश्वास, मुझे संतोष देता है।

<u>शब्दार्थ</u>

आहार– भोजन	हौले से – धीरे से
सुलभ– सरलता से प्राप्त होने वाला	कार्यकलाप– क्रियाएँ
गात– शरीर	लघुप्राण–छोटा सा प्राणी

आश्वस्त– विश्वास रखने वाला	निश्चेष्ट– क्रियाहीन
खाद्य– भोजन	बहिष्कार–बाहर निकालना
परिचारिका– सेविका	उष्णता– गर्मी
सर्वथा– पूरी तरह	लघुगात– छोटा–जीवन
पीताभ–जिसमें पीली आभा निकलती हो।	

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1 'आज उस लघुप्राण की खोज है।' महादेवी वर्मा ने लघुप्राण किसे कहा है?

(क) पीली कली (ख) सोनजूही

(ग) गिल्लू (घ) कौवा

2 मरणासन्न शब्द का अर्थ बताइये।

(क) मरने के लिए आसन (ख) मरने के बाद का आसन

(ग) मृत्यु (घ) मृत्यु निकट होने की स्थिति

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

3 'कौवे' का आह्‌वान कब किया जाता है और क्यों ?

4 जातिवाचक से व्यक्तिवाचक रूप देने से क्या अभिप्राय है ?

5 लेखिका ने नन्हें से घायल गिलहरी के बच्चे की जान कैसे बचाई ?

6 नन्हा सा गिल्लू गिलहरियों के झुंड का नेता कैसे बना ?

7 विपरीतार्थक शब्द लिखिए

सुलभ, निश्चेष्ट, आवश्यक, लघु–प्राण

लघूत्तरात्मक प्रश्न

8 ''उसकी समझदारी और कार्यकलाप पर सबको आश्चर्य होता था'' गिल्लू के वे कार्यकलाप कौन से थे?

9 गिल्लू को मुक्त करने की आवश्यकता क्यों अनुभव हुई?

10 लेखिका के साथ हुई दुर्घटना के बाद गिल्लू ने अपनी आत्मीयता किस प्रकार प्रकट की?

निबन्धात्मक प्रश्न

11 सोन जुही के पीताभ फूल महादेवी वर्मा को क्या स्मरण कराते हैं और क्यों?

12 वन्य जीवों के संरक्षण के लिए आप क्या करेंगे अपने शब्दों में लिखिए ?

13 अपने पड़ौस के किसी पालतू पशु या पक्षी की आदतों का अवलोकन कर लिखिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तरमाला

1. ग

2. घ